बकरी का माँस उत्तम एवं गुणकारी

डॉ. राजकुमार बेरवाल (MVSc, Ph.D.)

प्रभारी अधिकारी एवं सहायक आचार्य

पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रसार एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर)

फोन : 01509-221448, e-mail: vutrcsuratgarh.rajuvas@gmail.com

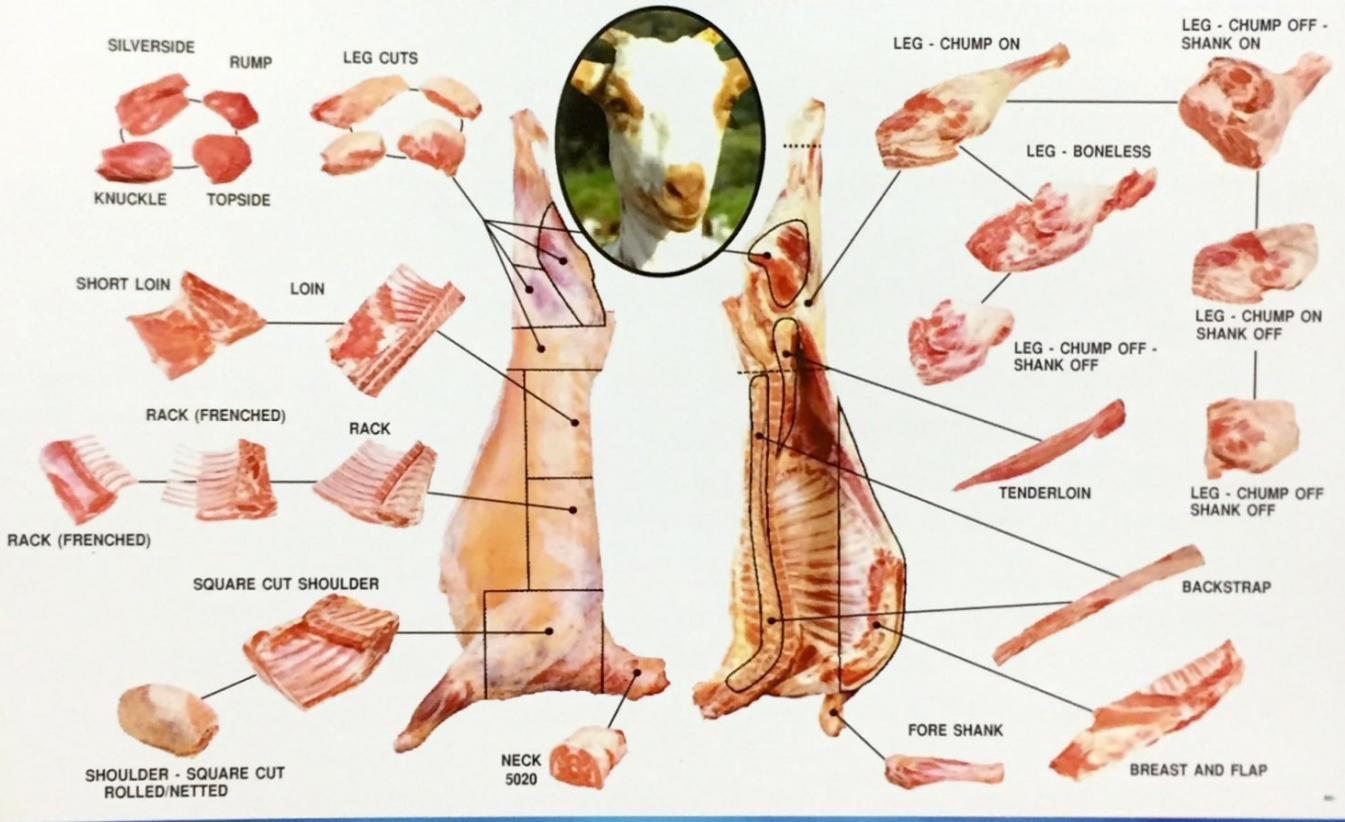

सम्पर्क सूत्र - डॉ. अनिल घोड़ेला, मो. 99280-22555

RSETI
Rural Self Employment Training Institutes
Powering Rural Entrepreneurship

ओ बी सी ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान
श्रीगंगानगर-335001 (राजस्थान)

प्रसार शिक्षा निदेशालय
राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर-334001 (राजस्थान)

Scanned with CamScanner

स में कोलेस्ट्रोल की मात्रा (६४.९२ मि०ग्रा०) कम पाई जाती है। दस्तावेजों से यह इंगित होत है कि उम्र, प्रजाति और क्षेत्र की विविधता के प्रभाव से दूर बकरी का मांस, उच्च गुणवत्ता वाली प्रोटीन एवं स्वस्थ वसा तथा कम कोलेस्ट्रोल वाला होता है। बकरी के मांस में तुलनात्मक रूप से कम सोडियम मात्रा के साथ, लोहा, पोटेशियम तथा थाइमीन अधिक मात्रा में पाई जाती है इसलिए उपरोक्त वर्णित कारणों की वजह से बकरी के मांस को प्राकृतिक रूप से स्वस्थ मांस, तथा बकरी को राष्ट्रीय मांस पशु के रूप में जाना जाता है।

बकरी के मांस उत्पाद

भारत में कच्चे मांस के उत्पादन का मूल्य संवर्धन, चीन के २३ प्रतिशत, फिलीपीन्स के ४५ प्रतिशत, यू०के० का १८८ प्रतिश्त की तुलना में मात्र ७ प्रतिशत है। यह तथ्य सामान्य मांस तथा बकरी के मांस के लिए भिन्न नहीं है। बकरी पालन के विकास के लिए प्रसंस्करण्रा द्वारा मूल्य संवर्धन, आज की अत्यन्त आवश्यकता है। बकरी का मांस सभी प्रकार के उत्पादों के लिए उपयोगी है, बकरी के मांस का विभिन्न प्रकार के उत्पाद में उपयोग किया जाता है। कितनी मात्रा में बकरी का मांस उनके उत्पादों को बनाने में प्रयोग किया जाता है इसके ठीक ठीक आंकड़े नहीं हैं। अनेक मांस उत्पाद, बकरी के मांस से सफलतापूर्वक बनाये जाते हैं। जैसे कि चिवान कवााव, कटलेट, नगेटस, सोसज, अचर, कोफ्ता, समोसा, क्रोकेट्स, पैटीज आदि। कम गुणवत्ता वाला बकरी का मंस भी सफलतापूर्वक इन कार्यों में प्रयोग होता है। बकरी के मांस से बने उपरोक्त उत्पादों का भी समान दैहिक महत्व है।

कुकड़िया रोग : बकरी मेमनों की करें रक्षा

बकरियों और उनके मेमनों में प्रचलित कुकड़िया रोग बकरी पालकों की विश्व व्यापी समस्या है। इस रोग से प्रभावित मेमने अपनी वृद्धि दर खो देते हैं और रोग की समाप्ति पर भी अपनी सामान्य वृद्धि दर को प्राप्त नहीं कर पाते। बकरियों में यह रोग एक कोशिकीय परजीवी के कारण होता है जो पशु की आंत में समूह के रूप में वृद्धि करते हैं। रोग के कारक परजीवी को अईमेरिया कहा जाता है और रोग को काक्सीडियेसिस कहते हैं। आम ग्रामीण भाषा में इसे कुकड़िया रेग कहते हैं।

रोग के प्रसारण

बकरियों में यह रोग परजीवी की सिस्ट/पुटिका से प्रदूषित आहार या जल के ग्रहण करने से होत है। रोग से प्रभावित पशु अपने मल के साथ परजीवी की पुटिका या सिस्ट का विसर्जन करते हैं। ये पुटिकाएं कुछ समय के लिए वातावरण में विकसित होने के बाद संक्रामक हो जाती हें। वातावरणीय परिस्थितियां, बाड़े का प्रबन्धन, पशु की आयु रोग की भीषणता के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बकरियों को भूमि पर आहार डाल कर देने, बाड़े में भीड़ के होने, व्यस्क बकरियों और मेमनों को साथ-साथ बाड़े में भीड़ के होने, वयस्क बकरियों और मेमनों को साथ-साथ बाड़े में भीड़ के होने, वयस्क बकरियों और मेमनें को साथ-साथ बाड़े में रखने तथा सफाई का समुचित प्रबन्ध न होने से कुकड़िया रोग का बकरियों में प्रभाव बढ़ जाता है। एक ही बाड़े का लम्बे समय तक उपयोग या वयस्क बकरियों के बाड़े का मेमनों को रखने के लिए प्रयोग इस रोग को जन्म देता है। कुकड़िया रोग की व्यापकता इतनी अधिक है कि किसी भी वातावरण, भौगोलिक स्थिति, प्रबन्धन व्यवस्था में इस रोग से बकरियों को बचाना असंभव है और किसी भी व्यवस्था को इस रोग के लिए आदर्श व्यवस्था नहीं कहा जा सकता।

परजीवी की लगभग १० प्रजातियां बकरियों में प्रचलित हैं जिसकी घातकता भी भिन्न है। आमतौर पर एक से अधिक आइमेरिया प्रजातियां एक समय में बकरियों को प्रभावित करती हैं। कुकड़िया रोग बकरियों के सभी अयु वर्ग को प्रभावित करता है परन्तु इसकी घातकता अल्पायु मेमनों में अधिक है। वयस्क बकरियों में रोग सामान्यत: प्रभाव शून्य है। परन्तु रोग प्रसारण में वयस्क पशु की भूमिका महत्त्वपूर्ण है क्योंकि वयस्क बकरियां ही मेमनों के लिए संक्रमण का स्रोत उपलब्ध कराती हैं और उनका सानिध्य ही मेमनों में कुकड़िया रोग को जन्म देता है।

रोग जनन

मल से प्रदूषित भोजन-पानी के साथ परजीवी पुटिकाएं तथा स्वस्थ शरीर में प्रवेश करती है। आंत में इनसे परजीवी की संक्रमणकारी अवस्था मुक्त हो अंत की दीवारों पर आक्रमण करती हैं। कालान्तर में परजलीवी आंत की दीवार में कोशिकाओं के भीतर परजीवी समूह (कालोनी) के रूप में विकसित होत है। इन परजीवी समूहों के फटने से बकरी आंत में घाव हो जाते हैं और उनसे रक्त क रिसाव होत है। प्रभावित अंत में घाव हो जाते हैं अैर उनसे रक्त का रिसाव होता है। प्रभावित आंत से पोषक तत्त्वों का अवशोषण बाधित होता है और मेमनों में आवश्यक तत्त्वों की आपूर्ति प्रभावित होती है। ऐसे में अल्पायु मेमनों में आवश्यक तत्त्वों की आपूर्ति प्रभावित होती है। ऐसे में अल्पायु मेमनों में

Scanned with CamScanner

वृद्धि रुक जाती है और उनका शारीरिक क्षय होता है। आंत में सफेद या क्रीम के रंग के आलपिन के सिर के आकार के छोटे परन्तु ऊभरे धब्बे परजीवी के समूह के दर्शाते हैं इन्हें वैानिक भाषा में साईजांट कहा जाता है। परजीवी द्वारा आंत को पहुंचाई क्षति के कारण आंतें अन्य उपयोग के लिए उपयुक्त नहीं रह जाती।

लक्षण

कुकड़िया रोग से ग्रसित मेमने कमजोर तथा कांतिहीन हो जाते हैं। उनकी प्राकृतिक चमक गायब हो जाती है। मेमनों की त्वचा शुष्क एवं रूक्ष दिखाई पड़ती है। आंख से स्राव होता है और आंख गड्ढे में चली जाती है। प्रभावित मेमनों में तेज दस्त प्रमुख लक्षण हैं। उनका पिछल भाग गीला और मल से सना होने से मक्खियों को आकर्षित करता है। दस्त तेज होने से मेमनों के शरीर में पानी की कमी हो सकती है जिससे उनकी मृत्यु हो सकती है। प्रभावित मेमनों में शारीरिक क्षय से उनका वजन कम हो जाता है और उनकी वृद्धि रुक जाती है। यह रोग २-६ माह के मेमनें में अधिक प्रभावी है वयस्क बकरियों में इसका प्रभाव कम ही हेता है। मेमनों की वृद्धि दर हमेशा के लिए प्रभावित हो सकती है। रोग के कारण मेमनों में १० प्रतिशत तक की मृत्यु दर सामान्य परन्तु अधिक प्रकोप की स्थिति में यह ४० प्रतिशत या उससे भी अधिक हो सकती है। प्रभावित रेबड़ में इस रोग से प्रभावित दर १०० प्रतिशत तक पाई जा सकती है।

निदान

रोग का प्रारम्भिक निदान लक्षणों पर आधारित है। मेमनों (२-६ माह) में एक साथ पतले दस्त कुकड़िया रोग को दर्शाते हैं। प्रभावित मेमनों के मल की जांच करा रोग का पता लगाया जा सकता है।

उपचार

बकरियों में रेग के उपचार हेतु निम्न औषधियों का प्रयोग किया जात है। उपलब्धता और इच्छानुसार किसी एक दवा का प्रयोग कर सकते हैं। सल्फाडाइमेडीन-२०० मि.ग्रा./कि.ग्रा. बकरी शरीर भार ३-५ दिन के लिए (प्रथम दिन पूरी तथा अगले दिनों में आधी खुराक दें।)

ऐम्प्रोलियम	-	५०-७५ मि.ग्रा./कि.ग्रा. शरीर भार (५-७ दिन पिलायें)
टोलट्राजुरिल	-	२० मि.ग्रा./कि.ग्रा. आहार
मोनेनसिन	-	१ ग्रा./४० कि.ग्रा. आहार

उपरोक्त दवा के साथ विटामिन बी-कामप्लेक्स २ मि.ली./मेमना का प्रयोग भी आवश्यक रूप से करना चाहिए। इन दवाईयों का प्रयोग इस रोग के रोधन में भी किया जाता है।

रोकथाम

कुकड़िया रोग बकरियों में प्रबन्धन की खामियों से होता है। अत: सामान्य प्रबन्धन सुधार से बकरियों को बचाया जा सकता है।

- ★ बकरियों और मेमनों को अलग-अलग स्थान/बाड़ों में रखें और आपस में मिलने न दें।
- ★ मेमनों/बकरियों को समुचित ऊँचाई की चरई में ही आहार दें तथा जमीन पर डालकर आहार न दें।
- ★ स्वच्छ पानी पीने के लिए दें।
- ★ बाड़े में सफाई की समुचित व्यवस्था करें और समय-समय बिछावन को बदलें।
- ★ लगभग दो महीने के अन्तराल पर बाड़े की मिट्टी को बदलें और नई मिट्टी डालें।
- ★ बाड़े में सफाई के बाद सप्ताह में एक बार बुझे चूने का छिड़काव करें।
- ★ बाड़े में नमी न बनने दें और खुली हवा और प्रकाश को पहुंचने दें।
- ★ बाड़े के अन्दर पशुओं की संख्या सीमित रखें और भीड़-भाड़ से बचाएं।
- ★ बकरियों के प्रक्षेत्र पर आने जाने वालों को नियंत्रित करें क्योंकि परजीवी संक्रमण उनके साथ बाहार से आ सकता है।
- ★ समय-समय पर बाड़े में संक्रमणनशी दवाओं का प्रयोग करें।
- ★ रोग की सम्भावना की स्थिति में २-६ माह आयु वर्ग के मेमनों में काक्सीडिया संक्रमणनशी दवा का पान करायें।
- ★ बाड़े में पीने के पनी की निरन्तर उपलब्धता सुनिश्चित करें।
- ★ समय-समय पर मल जांच करायें।

Scanned with CamScanner

तकनीकी मार्गदर्शन हेतु आभार

प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

प्रो. (डॉ.) अवधेश प्रताप सिंह

निदेशक, प्रसार शिक्षा

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

सम्पर्क सूत्र :

डॉ. राजकुमार बेरवाल

प्रभारी अधिकारी, पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़

फोन : 01509-221448

डॉ. अनिल घोड़ेला, मो. 9660669992

Scanned with CamScanner